चतुर्थ अध्याय- तथ्य प्रस्तुति एवं विश्लेषण

4.1 प्राथमिक आकड़ों की प्रस्तुति एवं विश्लेषण

सोशल मीडिया एवं डिजिटल भोजपुरी डायस्पोरा के अंतरसंबंधों पर आधारित प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए भोजपुरी डिजिटल डायस्पोरा के सक्रिय सदस्यों से ऑनलाइन प्रश्नावली के माध्यम से आँकड़े एकत्र किये गए। प्रश्नावली से प्राप्त आँकड़ों में आश्चर्यजनक रूप से विरोधाभास भी देखने को मिला है। मूलतः त्री-स्तरीय कोडिंग पर आधारित इस प्रश्नावली में प्रथमत: भोजपुरी प्रवासन के स्वरूप को समझने का प्रयास किया गया है वहीं दूसरे चरण में प्रवासी भोजपुरियों के फेसबुक उपयोग से जुड़े आँकड़े एकत्र किये गए हैं। तृतीय चरण में फेसबुक एवं भोजपुरी अस्मिता के अंतरसंबंधों को परखने की कोशिश की गई है। उपरोक्त प्रश्नावली-पूर्ति के लिए उत्तरदाताओं को देवनागरी, रोमन एवं देवनागरी- रोमन मिश्रित का विकल्प दिया गया।

उत्तरदाताओं से प्राप्त आँकड़े बताते हैं कि 64 प्रतिशत लोग कम्प्युटर के माध्यम से देवनागरी लिपि लिखने में सक्षम हैं, वहीं 12 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने प्रश्नावली को रोमन लिपि में भरा है। रोमन लिपि में प्रश्नावली की पूर्ति उन्हीं उत्तरदाताओं ने की है जो पुराने भोजपुरी डायस्पोरा मसलन सूरीनाम, मॉरीशस, फीजी जैसे देशों में रहते हैं। वहीं 24 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने मिश्रित (देवनागरी+रोमन) रूप में प्रश्नावली को भरा। इसे *ग्राफ संख्या- 4.1* के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है-

ग्राफ संख्या- 4.1

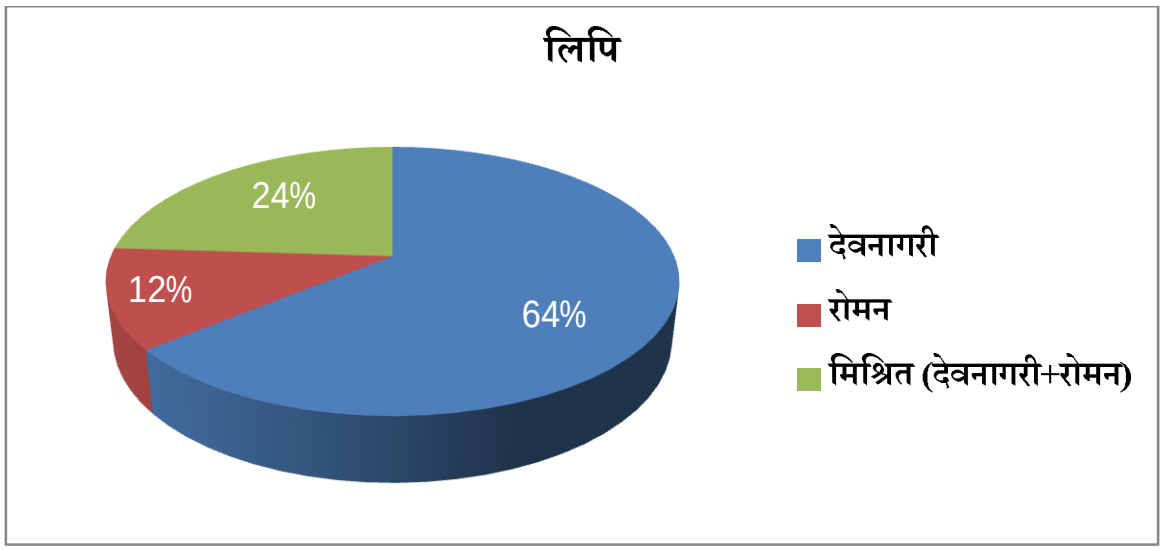

दरअसल लिपि, भाषा से जुड़ी है और भाषा सीधे तौर पर अस्मिता से जुड़ी होती है। भोजपुरी की प्रचलित लिपि देवनागरी है अतः प्रवासी भोजपुरियों द्वारा देवनागरी लिपि का प्रयोग करते हुए प्रश्नावली को भरना उनके अस्मिता बोध को प्रतिबिम्बित करता है।

उत्तरदाताओं से प्राप्त आँकड़े प्रवासी भोजपुरियों की सामाजिक स्थिति स्पष्ट करते हैं। भोजपुरी डिजिटल डायस्पोरा में महिलाओं की मौजूदगी पुरुषों के मुकाबले बेहद कम है। जहां उत्तरदाताओं में पुरुष 96 प्रतिशत है वहीं महिलाओं की भागीदारी महज 4 प्रतिशत ही है। इसे *ग्राफ संख्या- 4.2* द्वारा प्रदर्शित किया गया है-

ग्राफ संख्या- 4.2

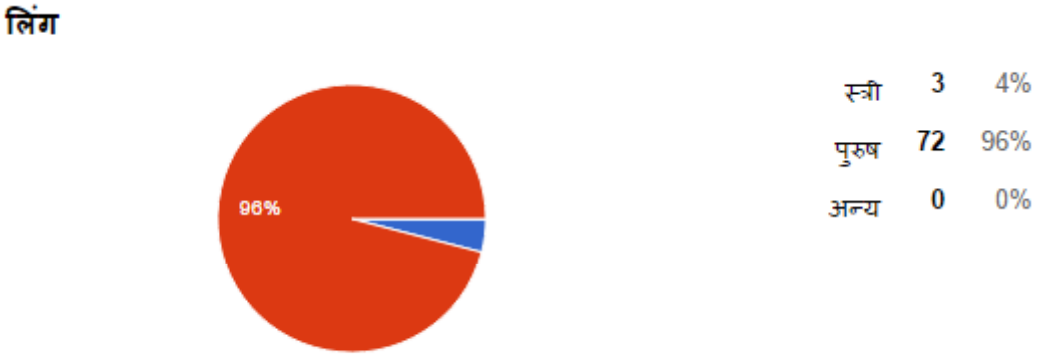

प्रश्नावली के माध्यम से उत्तरदाताओं के भाषाई ज्ञान से जुड़ें आँकड़ों को एकत्र करने का प्रयास किया गया तो कई आश्चर्यजनक तथ्य प्राप्त हुए। उत्तरदाताओं में 17.6 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो भोजपुरी, हिंदी, अंग्रेजी सहित किसी अन्य भाषा की भी जानकारी रखते हैं। वहीं 64.9 प्रतिशत लोग भोजपुरी, हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखते हैं, दूसरी ओर 71.6 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो भोजपुरी एवं हिंदी दोनों की जानकारी रखते हैं। इसे *ग्राफ संख्या- 4.3 के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है-*

ग्राफ संख्या- 4.3

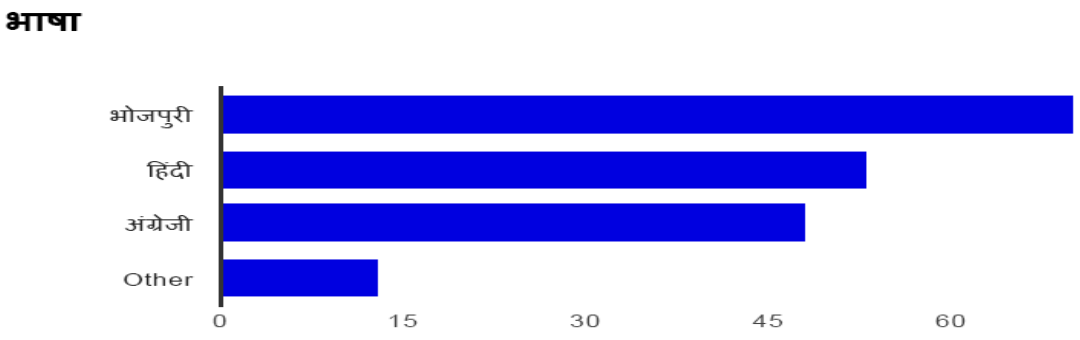

भोजपुरी	70	94.6%
हिंदी	53	71.6%
अंग्रेजी	48	64.9%
Other	13	17.6%

जब उत्तरदाताओं से उनकी पैतृक भूमि के बारे में जानने की कोशिश की गई तो 65.3 प्रतिशत लोग मूलतः बिहार से हैं वहीं 34.7 प्रतिशत लोग मूलतः पूर्वी उत्तर प्रदेश के रहने वाले हैं। इसे *ग्राफ संख्या- 4.4* द्वारा दर्शाया गया है-

ग्राफ संख्या- 4.4

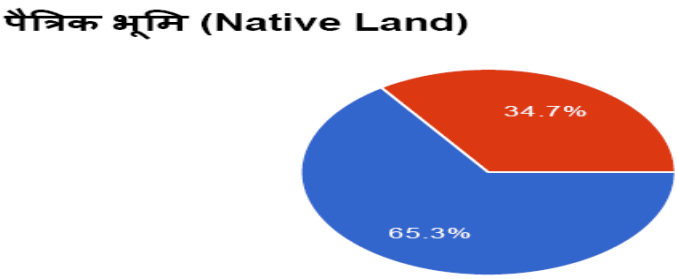

बिहार	49	65.3%
उत्तर प्रदेश	26	34.7%
Other	0	0%

उत्तरदाताओं से प्रश्नावली के दूसरे चरण में प्रवासी भोजपुरियों के फेसबुक उपयोग से संबंधित प्रश्नों को पूछा गया। उत्तरदाताओं से प्राप्त आँकड़े प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए बेहद महत्वपूर्ण साबित हुए। इन आँकड़ों को आधार बना कर शोध प्रश्न को संबोधित करने का प्रयास किया गया। इसी क्रम में जब

उत्तरदाताओं से यह प्रश्न पूछा गया कि आप फेसबुक पर किन-किन भोजपुरी पेजों से जुड़ें हैं तो 69 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि वे 'आखर[39] (एगो डेग भोजपुरी साहित्य खाति)' से जुड़ें हैं, वहीं फेसबुक पेज Bhojpuri Association of India - BHAI[40] से 49.3 प्रतिशत लोग जुड़े हैं। फेसबुक ग्रुप Bhojpuri Speaking Union[41] से 12.7 प्रतिशत लोग जुड़ें हैं जबकि अन्य भोजपुरी पेज/ग्रुप से 14.1 प्रतिशत लोग जुड़े हैं। इसे *ग्राफ संख्या- 4.5* के माध्यम से दर्शाया गया है-

ग्राफ संख्या- 4.5

निम्न भोजपुरी पेजों/ग्रुप्स से आप जुड़ें हैं-

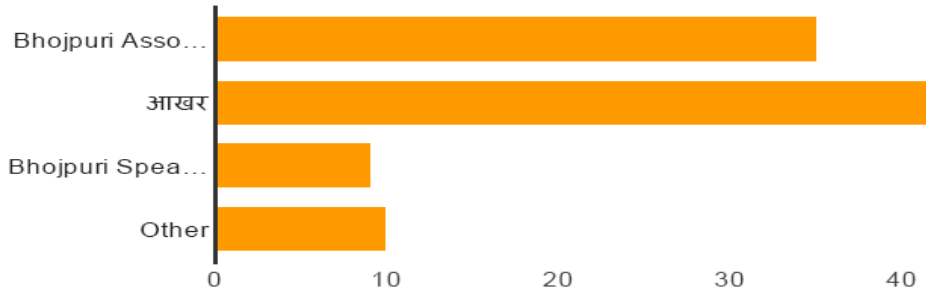

Bhojpuri Association of India - BHAI	**35**	49.3%
आखर	**49**	69%
Bhojpuri Speaking Union	**9**	12.7%
Other	**10**	14.1%

[39] https://www.facebook.com/Aakhar
[40] https://www.facebook.com/Bhojpuriindia.org/?fref=ts
[41] https://www.facebook.com/groups/652215894896684/?fref=ts

4.2 भोजपुरी डिजिटल डायस्पोरा और फेसबुक

1. आप फेसबुक का उपयोग किस माध्यम से करते हैं?

ग्राफ संख्या- 4.6

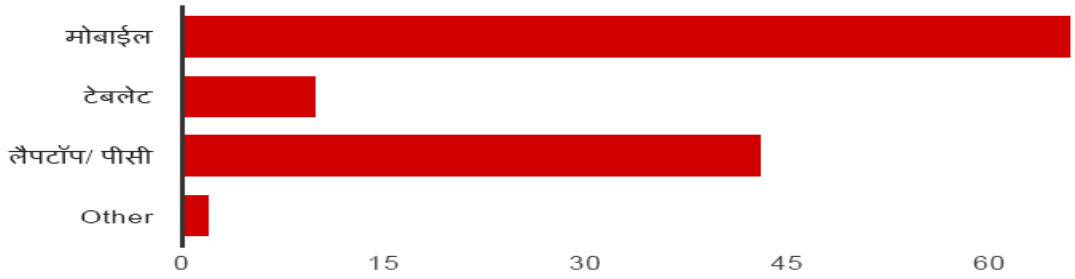

मोबाईल	66	88%
टेबलेट	10	13.3%
लैपटॉप/ पीसी	43	57.3%
Other	2	2.7%

जब उत्तरदाताओं से फेसबुक उपयोग करने के माध्यमों के बारे में पूछा गया तो 88 प्रतिशत ने कहा कि वे फेसबुक का उपयोग मोबाईल के माध्यम से करते हैं वहीं टेबलेट के माध्यम से 13.3 प्रतिशत उत्तरदाता फेसबुक का उपयोग करते हैं। जबकि लैपटॉप/पीसी के माध्यम से फेसबुक का उपयोग 57.3 प्रतिशत लोग करते हैं और 2.7 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे भी थे जो फेसबुक का उपयोग अन्य माध्यमों से करते हैं। उत्तरदाताओं से इस प्रश्न को पूछने का उद्देश्य मोबाईल की वजह से फेसबुक उपयोगकर्ताओं की संख्या में हुई बढ़ोत्तरी के बारे में तथ्य एकत्र करना था। मोबाईल एक सरल एवं सुलभ माध्यम है और इसकी पहुँच अन्य माध्यमों की अपेक्षा अधिक लोगों तक है। उपरोक्त आँकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है, प्रवासी भोजपुरिया उत्तरदाताओं में से अधिकतर मोबाईल के माध्यम से फेसबुक का उपयोग करते हैं। उत्तरदाताओं को उपरोक्त प्रश्न के लिए एक से अधिक उत्तर चुनने का विकल्प दिया गया था। उपरोक्त प्रश्न के संदर्भ में उत्तरदाताओं से मिले सारे आँकड़ें उनके द्वारा चुने गए विकल्पों पर आधारित हैं।

2. प्रतिदिन फेसबुक का उपयोग आप कितनी देर करते हैं?

ग्राफ संख्या- 4.7

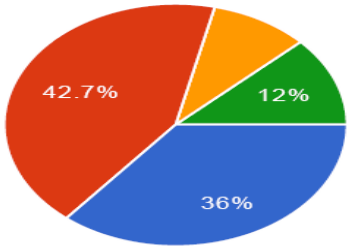

0-1 घंटे	27	36%
1-3 घंटे	32	42.7%
3-5 घंटे	7	9.3%
5 घंटे अधिक	9	12%

प्रतिदिन फेसबुक उपयोग करने की अवधि के बारे में जब उत्तरदाताओं से प्रश्न किया गया तो 36 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 0-1 घंटे की अवधि तक फेसबुक उपयोग करने की बात कही। वहीं 42.7 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जो प्रतिदिन 1-3 घंटे तक फेसबुक का उपयोग करते हैं। 3-5 घंटे तक फेसबुक का उपयोग करने वाले उत्तरदाता 9.3 प्रतिशत हैं जबकि 12 प्रतिशत उपयोगकर्ता ऐसे भी हैं जो रोजाना 5 घंटे से अधिक समय तक फेसबुक का उपयोग करते हैं।

3. आप फेसबुक का उपयोग क्यों करते हैं?

ग्राफ संख्या- 4.9

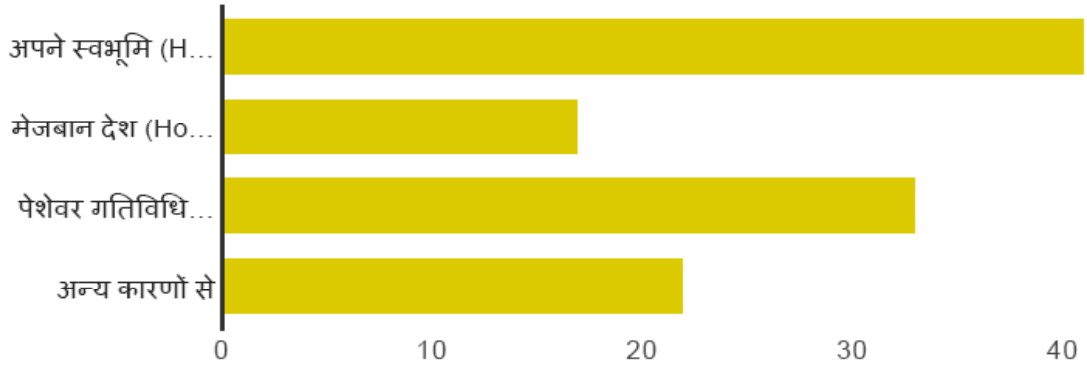

अपने स्वभूमि (Home Land) से जुड़े रहने हेतु	41	62.1%
मेजबान देश (Host Land) में नए संपर्क बनाने हेतु	17	25.8%
पेशेवर गतिविधियों को साझा करने के लिए	33	50%
अन्य कारणों से	22	33.3%

जब उत्तरदाताओं से उनके फेसबुक उपयोग से संबंधित प्रश्न पूछा गया तो कई महत्त्वपूर्ण तथ्य प्राप्त हुए। 62.1 प्रतिशत उत्तरदाता फेसबुक का उपयोग अपनी स्वभूमि से जुड़े रहने के लिए करते हैं, वहीं पेशेवर गतिविधियों को साझा करने के उद्देश्य से फेसबुक का उपयोग 50 प्रतिशत उत्तरदाता करते हैं। मेजबान देश में नए संपर्क बनाने हेतु फेसबुक का उपयोग 25.8 प्रतिशत लोग करते हैं जबकि 33.3 प्रतिशत लोग ऐसे भी हैं जो अन्य कारणों से फेसबुक का उपयोग करते हैं। इस प्रश्न में भी उत्तरदाताओं को एक से अधिक उत्तर चुनने का विकल्प दिया गया था ताकि भोजपुरी प्रवासियों के फेसबुक उपयोग करने के व्यापक उद्देश्यों को स्पष्ट किया जा सके। उत्तरदाताओं से प्राप्त आँकड़ें प्रवासी समूहों द्वारा सोशल मीडिया उपयोग के अधारभूत सिद्धातों की पुष्टि करते हैं। इन सिद्धातों में कहा गया है कि प्रवासी समूहों के लिए सोशल मीडिया उनकी स्वभूमि से जुड़ने का प्रभावी माध्यम है।

4. *फेसबुक के माध्यम से आप किस तरह अपनी भोजपुरी पहचान को अभिव्यक्त करते हैं?*

ग्राफ संख्या- 4.10

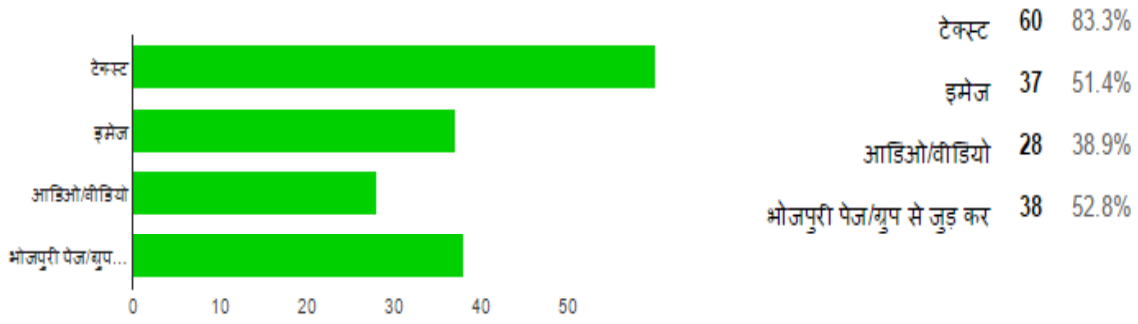

फेसबुक के माध्यम से भोजपुरी पहचान को अभिव्यक्त करने के संबंध में जब उत्तरदाताओं से पूछा गया तो 83.3 प्रतिशत लोगों ने टेक्स्ट के माध्यम से अपनी पहचान जाहिर करने की बात कही। वहीं 51.4 प्रतिशत लोगों ने कहा कि इमेज (चित्र) के माध्यम से वे अपनी भोजपुरी पहचान को अभिव्यक्त करते हैं। 38.9 प्रतिशत लोग ऐसे भी थे जो ऑडियो/वीडियो के माध्यम से अपनी पहचान जाहिर करते हैं जबकि 52.8 प्रतिशत लोग भोजपुरी पेज/ग्रुप से जुड़ कर अपनी पहचान को व्यक्त करते हैं। इस प्रश्न में भी उत्तरदाताओं को एक से अधिक उत्तर चुनने का विकल्प दिया गया था ताकि फेसबुक के माध्यम से प्रतिबिम्बित होने वाली अस्मिता के स्वरूप को समझा जाए। इस प्रश्न के आलोक में उत्तरदाताओं से प्राप्त आँकड़ें बताते हैं कि आज भी टेक्स्ट यानी भाषिक रूप में अस्मिता को अभिव्यक्त करने वाले लोगों की संख्या ज्यादा है। भोजपुरी केंद्रित ग्रुप/पेज से जुड़ने के संदर्भ में प्राप्त आँकड़ें प्रवासी समूहों के समूहन की प्रक्रिया को भी समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है।

ग्राफ संख्या- 4.11

5. आपके और अन्य भोजपुरियों के बीच फेसबुक किस तरह के साइबर समूह का निर्माण करता है?

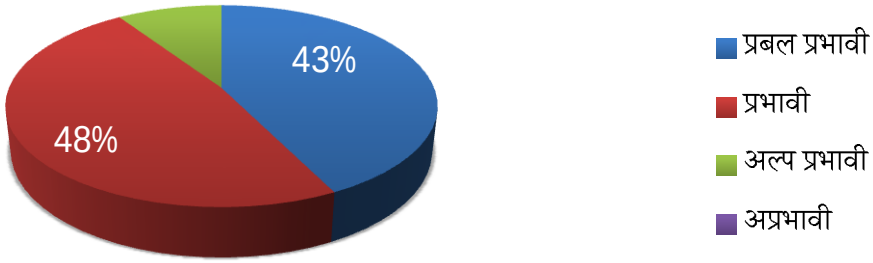

फेसबुक के माध्यम से प्रवासी भोजपुरियों के बीच बने साइबर समूह निर्माण की प्रभावशीलता के संदर्भ में जब उत्तरदाताओं से पूछा गया तो 42.7 प्रतिशत प्रबल प्रभावी साइबर समूह बनने की बात कही। 48 प्रतिशत लोग वैसे भी हैं जो यह मानते है कि फेसबुक के माध्यम से प्रभावी साइबर समूह का निर्माण होता है, वहीं 9.3 प्रतिशत लोगों को ऐसा लगता है कि फेसबुक के माध्यम से निर्मित साइबर समूह अल्प-प्रभावी है। फेसबुक के माध्यम से बने साइबर समूह को अप्रभावी मानने की बात किसी भी उत्तरदाता ने नहीं कही। इस प्रश्न को प्रभावी बनाने के लिए उत्तरदाताओं को एक से अधिक उत्तर चुनने का विकल्प दिया गया था। उपरोक्त प्रश्न के संदर्भ में प्राप्त आँकड़ें फेसबुक पर निर्मित साइबर समूहों के प्रभावी होने की पुष्टि करते हैं।

4.3 फेसबुक के माध्यम से अस्मिता का निर्माण

6. बतौर भोजपुरिया आपके लिये फेसबुक से जुड़ने का क्या अर्थ है?

जब उत्तरदाताओं से बतौर भोजपुरिया फेसबुक से जुड़ने के अर्थ के बारे में पूछा गया तो बड़े ही रोचक तथ्य प्राप्त हुए। उत्तरदाताओं से प्राप्त यह तथ्य फेसबुक और प्रवासियों के संबंध में हुए अध्ययनों से प्राप्त परिणाम को पुन: स्थापित करने वाले सिद्ध हुए। संचार माध्यमों का उपयोग करते हुए प्रवासी समूहों द्वारा अस्मिता निर्माण, समूहन एवं आपसी जुड़ाव को प्रदर्शित किया जाता है। उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रति उत्तर इन तथ्यों की पुष्टि कर रहे हैं। एक ओर जहाँ उत्तरदाता फेसबुक का उपयोग अपनी मूलभूमि से जुड़े रहने के लिए कर रहे हैं-

"न्यूयॉर्क जैसे शहर में, शायद ही मैं भोजपुरी बोल पाता हूँ। मेरी दिनचर्या US English से शुरू और ख़त्म होती है। मेरी पत्नी भी भोजपुरी भाषी नहीं है। फेसबुक एक माध्यम है जिससे मैं भोजपुरी भाषा और भाषियों से जुड़ पाता हूँ। यह मुझे बचपन और अतीत की ओर ले जाता है।"

उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण से पता चलता है कि फेसबुक का उपयोग कर ये प्रवासी अपने गांव क्षेत्र एवं भाषा से पुनः जुड़ रहे हैं।

"हम अपनी मिट्टी से दूर हैं। फेसबुक के जरिये हम अपने आप को मिट्टी के करीब पाते हैं। फेसबुक के जरिये अपनी मातृभूमि, मातृभाषा को सम्मान दिला सकें। फेसबुक से जुड़ने का यही उद्देश्य है।"

वहीं दूसरी ओर फेसबुक के माध्यम से भोजपुरी अस्मिता आंदोलन को सशक्त करने का प्रयास प्रवासियों द्वारा किया जा रहा है। इन प्रवासियों में अपनी संस्कृति और भाषा को लेकर एक सामूहिक चेतना भी दिखाई देती है-

"पेशे की व्यस्तता और भोजपुरियों से दूर रहने पर भी फेसबुक के माध्यम से मैं, अपने गाँव, नगर, अपनी भोजपुरी तथा अपने हित-मित्रों से जुड़ा रहता हूँ। मेरी मित्र-मंडली में कई ऐसे मित्र हैं जिनसे प्रत्यक्ष रूप से मैं कभी नहीं मिला, मगर फेसबुक के माध्यम से निरंतर बातें और चर्चाएं होती रहती है। फेसबुक के माध्यम से मैं अपने देश के विविध शहरों में हो रही गतिविधियों के साथ ही ओमान, मॉरीशस, अमेरिका, नेपाल, सिंगापुर आदि देशों की भोजपुरी गतिविधियों से जुड़ा पाता हूँ। ऑनलाइन चर्चाओं में सम्मिलित होता हूँ। अपना अनुभव शेयर करता हूँ। दूसरों से अनुभव प्राप्त करता हूँ।"

भोजपुरी लोक साहित्य के संरक्षण एवं संवर्धन को लेकर ये प्रवासी भोजपुरिया सचेत हैं। फेसबुक के माध्यम से इनके द्वारा भोजपुरी संस्कृति और भाषा के संरक्षण का प्रयास भी किया जा रहा है -

"भोजपुरी को समुचित मान दिलाना व युवाओं को भोजपुरी के प्रति आकर्षित करना। भोजपुरिया लोगों के बीच भोजपुरी साहित्य की हर विधा तक आसान पहुंच बनाना। भोजपुरी में लेखन के लिए रचनाकारों को अभिप्रेरित करना। भोजपुरी भाषा के साहित्य का भंड़ार नित बढ़ता रहे इस हेतु प्रयासरत रहना। भोजपुरी की विभिन्न गतिविधियों को लेकर तालमेल बनाना। भोजपुरी, हर भोजपुरिया के लिए संवाद का माध्यम बने इस हेतु प्रयास करना। भोजपुरी भाषा का समुचित संपोषण आधुनिक सूचना संचार के दौर में करना। पुरानी रचनाओं को ऑनलाइन उपलब्ध कराने का प्रयास करना।"

उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रतिक्रियाएँ, शोध उद्देश्य को सिद्ध कर रहीं हैं। उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रवासी भोजपुरियों द्वारा फेसबुक का उपयोग अपनी मातृभूमि से जुड़ने, मातृभाषा को संरक्षित करने के लिए किया जा रहा है। फेसबुक के उपयोग से इन प्रवासियों के बीच आपसी जुड़ाव की भावना भी सबल हो रही है।

7. *फेसबुक पर अन्य लोगों (गैर भोजपुरिया) की अपेक्षा आप भोजपुरी भाषियों से क्यों अधिक अपनत्व महसूस करते हैं?*

अपनत्व की भावना से जुड़े प्रश्न को जब उत्तरदाताओं के समक्ष रखा गया तो महत्त्वपूर्ण प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुई। उत्तरदाता स्वीकार करते हैं कि फेसबुक पर अन्य भाषा-भाषियों की अपेक्षा भोजपुरी भाषियों के साथ ज्यादा सहज महसूस करते हैं।

"मैं, सहज हो जाता हूँ जब किसी भोजपुरी भाषी से फेसबुक पर बात करता हूँ। अपनी भाषा में बात कर अच्छा महसूस होता है। हाँ, यह सच है। अपनी भाषा का अपनत्व ज्यादा आकर्षित करता है।"

यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह अपने परिवार के लोगों से अधिक जुड़ाव महसूस करता है। ज्यादातर उत्तरदाता यह मानते हैं कि फेसबुक उनके लिए एक परिवार की तरह है-

"होश संभालने के बाद ही माँ से जो पहली भाषा सुना, परिवेश में जो सुना, वह भोजपुरी भाषा है। यह मेरी माँ की भाषा है। जब कोई भोजपुरिया मिलता है तो लगता है कि कोई मेरा सहोदर BHAI है। दूसरे द्वारा बोली गई भोजपुरी बोली मुझे मेरी माँ और मिट्टी की याद दिलाती है।"

वहीं उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भाषाई नजदीकी से अपनत्व का संचार होता है-

"क्योंकि हमारी मातृभाषा एक है और एक माँ के संतानों में जुड़ाव स्वाभाविक है। अपनी मातृभाषा से जुड़े लोगों के सम्पर्क में रहने से हम अपनी संस्कृति एवं परम्पराओं से हमेशा जुड़े रहते हैं।"

समान संस्कृति, परंपरा एवं भाषिक परिवेश से होने की वजह से प्रवासियों के बीच अपनापन की भावना बढ़ती है-

"मातृभाषा हमेशा से अपने आप को अभिव्यक्त करने का सबसे सहज माध्यम है। जाहिर सी बात है जो आदमी सपने भोजपुरी में देखता हो, अपनी अंतरात्मा से भोजपुरी में बात करता हो और भोजपुरी में सोचता हो वह अपनी मातृभाषा, भाषियों से अधिक अपनत्व महसूस करेगा।"

उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रतिक्रिया में मातृभाषा एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति अस्मिताबोध परिलक्षित होता है। अपनी मूलभूमि से दूर इन प्रवासियों द्वारा, फेसबुक के माध्यम से स्थापित संबंधों में भाषा, संस्कृति, जन्मभूमि के प्रति अपनत्व का भाव महसूस होता है।

8. फेसबुक आपकी अस्मिता के निर्माण में किस तरह की मदद करता है ?

फेसबुक विचार अभिव्यक्ति का सामजिक मंच है। अतः अस्मिता निर्माण हेतु फेसबुक द्वारा मिलने वाली मदद को लेकर जब उत्तरदाताओं से प्रश्न किया गया तो बेहद मुखर प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुई-

"फेसबुक का प्रयोग हम अपनी निजी अस्मिता हेतु नहीं वरन् माई भाषा भोजपुरी की गौरवमयी अस्मिता हेतु करते हैं। भोजपुरी की अस्मिता के साथ हमारी अस्मिता भी जुड़ी हुई है।"

इस मंच पर आपकी पहचान (अस्मिता) आपके विचारों की अभिव्यक्ति से ही है। विचार अभिव्यक्ति का माध्यम टेक्स्ट, गीत संगीत फोटो या वीडियो कुछ भी हो सकता है। समुदाय-निर्माण फेसबुक की प्रेरणा रही है। इसे उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाओं में देखा जा सकता है-

"भोजपुरी समुदाय की व्यापकता, 1000 वर्षों का इतिहास, प्रबुद्ध साहित्य, महाकवि कबीर कहीं न कहीं मेरी अस्मिता का परिचायक हैं।"

अस्मिता निर्मित करने में फेसबुक की भूमिका के बारे में एक उत्तरदाता अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करते हुए कहता है-

"अस्मिता निर्माण में फेसबुक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। यह नहीं होता तो शायद हम प्रवासी भोजपुरिया, अन्य भोजपुरियों से इतनी आसानी से और इतनी जल्दी जुड़ नहीं पाते।"

उत्तरदाता यह मानते हैं कि फेसबुक ने इन प्रवासी भोजपुरियों को एक पहचान दी है जहाँ ये अपनी अस्मिता को प्रदर्शित करते हैं-

"मैं, आखर पेज से जुड़ा हूँ जिसका आधार ही भोजपुरी है और इसके सदस्य फेसबुक से जुडे हैं। इसके कारण मैं अपनी लोक संस्कृति और संस्कार से जुड़ा। जाहिर है यह मेरी अस्मिता से जुड़ा हुआ है। फेसबुक ने मुझे अपने आप को जानने में मदद की।"

साथ ही साथ उत्तरदाता यह भी मानते हैं कि -

"फेसबुक के ज़रिए हम अपनी भाषा में ज़्यादा सहूलियत के साथ अपने से दूर बैठे लोगों तक अपनी बात रख पाते हैं। हमें फेसबुक पर अपनी भाषा से जुड़े विभिन्न बुद्धिजीवियों से जुड़ने का मौक़ा मिलता है। इनकी वजह से हमें अपनी भाषा, अपने समाज एवं अपनी संस्कृति को और अधिक समझने का अवसर प्राप्त होता है।"

उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि फेसबुक प्रवासी भोजपुरी भाषियों में भोजपुरिया होने के भाव को कायम रखे हुए है। फेसबुक के माध्यम से इन प्रवासियों को अपनत्व और एकता को मजबूत करने में मदद मिल रही है -

"हम नए लोगों को जोड़ते हैं। जो भोजपुरिया हैं। बहकावे में या जैसे भी अपनी मिट्टी एवं मातृभाषा से दूर भागने की कोशिश करते हैं। उनको भोजपुरी पर गर्व करने के लिए उकसाते हैं।"

उत्तरदाता यह भी मानते हैं कि फेसबुक के माध्यम से इनका सम्प्रेषण बना रहता है-

"फेसबुक के माध्यम से हम अपनी भागदौड़ भरी जिंदगी में से कुछ समय अपने गांव-जवार और भोजपुरी परिवार से जुड़ने का अवसर मिलता है जिससे आत्म गौरव बढ़ता है।"

फेसबुक के माध्यम से ये प्रवासी अपनी साहित्यिक और सांस्कृतिक रुझान को व्यक्त करते हैं। उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि फेसबुक इनके लिए अपनी अस्मिता को व्यक्त करने और एक सकारात्मक संवाद की स्थिति उत्पन्न करने में सहायक होता है।

4.3 सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य एवं फेसबुक पोस्ट

9. *आप के द्वारा सोशल मीडिया पर चलाये जा रहे भोजपुरी अस्मिता आंदोलन (8वीं अनुसूची में शामिल करने हेतु) को फेसबुक किस तरह गति प्रदान कर रहा है?*

भोजपुरी की संवैधानिक मान्यता हेतु गतिशील आंदोलन में फेसबुक की भूमिका के संदर्भ में जब उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया जानने का प्रयास किया गया तो आश्चर्यजनकजनक परिणाम प्राप्त हुए। उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि फेसबुक की वजह से ज्यादा से ज्यादा लोग, उनके द्वारा चलाये जा रहे आंदोलन से जुड़ पाये-

"फेसबुक की वजह से भोजपुरी अस्मिता आंदोलन को बहुत बल मिला है। भोजपुरी को 8वीं अनुसूची में लाये जाने की मांग हेतु - 60 दिनों में BHAI (BHAI) के पेज पर 42000 लोगों का जुड़ना कहीं न कहीं इसको सिद्ध करता है।"

उत्तरदाता मानते हैं कि फेसबुक 'संगठन की भावना' प्रेरित करने के लिये प्लेटफार्म प्रदान करता है। इसके उपयोग से प्रवासी भोजपुरिया संगठित हो रहे हैं और अपने भाषाई हक के लिए सोशल मीडिया के माध्यम से प्रयासरत हैं-

"फेसबुक ने भोजपुरी आंदोलन को सशक्त किया है जिसके माध्यम से हम देश दुनिया के भोजपुरी भाषा भाषियों से मिल जुल रहे हैं। साथ ही इस लड़ाई को भारत ही नहीं सुदूर अमेरिका, दुबई और ऑस्ट्रेलिया के साथ-साथ मॉरीशस से भी सहयोग और समर्थन इसी मंच के कारण मिला है। भारत के अन्य प्रान्त में रह रहे भोजपुरी भाषा-भाषियों ने भी इस आंदोलन से अपने को जोड़ा है जिसमें फेसबुक की अहम् भूमिका रही है।"

उत्तरदाताओं से मिली प्रतिक्रियाएँ, शोध प्रश्न 'प्रवासी भोजपुरी सांस्कृतिक अस्मिता के निर्माण में फेसबुक की भूमिका' के स्वरूप को रेखांकित कर रही हैं-

"फेसबुक के माध्यम से इस आंदोलन में अधिक से अधिक संख्या में हमारे BHAI बहन जो किसी कारण वश अपनी माटी से दूर हैं, इस आंदोलन में जुड़ रहे हैं और इसकी ताक़त बढ़ा रहे हैं। वैसे भोजपुरी भाषी जो भोजपुरी बोलने में हिचकते हैं, अब अपनी मातृभाषा के विकास का महत्त्व समझ रहे हैं और यह फेसबुक के माध्यम से ही संभव हो रहा है।"

वहीं भोजपुरी प्रवासियों से मिली प्रतिक्रियाओं में आंशिक विरोधाभास भी देखने को मिल रहा है। भोजपुरी अस्मिता के लिए फेसबुक पर गतिशील आंदोलन में फेसबुक की भूमिका को ऐसे उत्तरदाता नकारते तो नहीं हैं लेकिन उसकी गति को लेकर अपनी चिंता जाहिर करते हैं-

"प्रयास पुरजोर है। बहुत से लोग इसके लिए लड़ रहे हैं। मेरा योगदान भी शत् प्रतिशत है। सरकार की ओर से आश्वासन तो मिल रहा है लेकिन हमको अपनी आवाज और ज्यादा तेज करनी होगी तब जाकर कहीं इस पक्ष में कोई मजबूत कदम उठता दिखेगा।"

उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि फेसबुक के ज़रिए वैसे बहुत से लोग आज इस आंदोलन का हिस्सा बन रहे हैं जो कभी इस आंदोलन से अनभिज्ञ थे। व्यापक रूप से फेसबुक ने इस आंदोलन के साथ नए नए लोगों को जोड़ने में काफ़ी सहायता की है। फेसबुक पर भोजपुरी सशक्त आकार ग्रहण कर रही है। भोजपुरी अस्मिता के डिजिटल आंदोलन में फेसबुक की महत्वपूर्ण भूमिका है। फेसबुक के ज़रिए प्रवासी भोजपुरिया अपनी भागीदारी को बेहतर दिशा दे रहे हैं।

10. भोजपुरी सांस्कृतिक अस्मिता के संरक्षण के लिए आप फेसबुक का उपयोग किस तरह करते हैं?

सांस्कृतिक अस्मिता संरक्षण के संबंध में फेसबुक के उपयोग के बारे में जब उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया पूछी गई तो उन्होंने बड़ी स्पष्टता के साथ अपनी राय जाहिर की। फेसबुक के माध्यम से अपनी मातृभाषा में लिखने की बात कही-

"मैं, अपनी भाषा में ज़्यादा खुल के अपनी बात लिखता हूँ, अपने परिवार ही नहीं अपने जान पहचान वाले सभी को अपनी भाषा में बात करने की सलाह देता हूँ और गुज़ारिश करता हूँ, अपनी भाषा भोजपुरी में उपलब्ध साहित्य को जानने की कोशिश करता हूँ और उसे अपने फ़ेसबुक मित्रों के साथ साझा करता हूँ।"

फेसबुक के माध्यम से, वैचारिक संवादों के परस्पर आदान-प्रदान के द्वारा भोजपुरी सांस्कृतिक अस्मिता के संरक्षण की बात ज्यादातर उत्तरदाताओं ने कही-

"फेसबुक एक बहुत ही बेहतर प्लेटफॉर्म है जहाँ हम अपनी माटी से दूर रह रहे भोजपुरिया भाइयों, जो अपनी संस्कृति और भाषा को इस भागदौड़ की जिंदगी मे भूल गए हैं उनको अपनी संस्कृति से पुन: जोड़ सकते हैं।"

वहीं दूसरी ओर उत्तरदाताओं ने फेसबुक के माध्यम से भोजपुरिया और गैर भोजपुरिया लोगों के समक्ष भोजपुरी साहित्य, संगीत जैसे हर पहलू को मजबूती के साथ प्रस्तुत करने की बात कही-

"हम फेसबुक पर नये लोगों को जोड़ते हैं और उनसे रोजाना अपनी मातृभाषा(भोजपुरी) में दो लाइन लिखने की विनती करते हैं। लोगों के ऊपर काफी असर हुआ है, अब फेसबुक पर पहले की अपेक्षा अधिक लोग रोज अपनी मातृभाषा में लिख रहें हैं।"

भोजपुरी साहित्य के संवर्धन की दिशा में प्रयास करने की बात उत्तरदाताओं ने कही। भोजपुरी में अपने पोस्ट को लिखना, अच्छी भोजपुरी की रचनाओं को शेयर करना एवं भोजपुरी लोक संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को लोगों के बीच परोसने की बात करते हुए उत्तरदाता कहते हैं-

"हम, भोजपुरी में अपनी बातों-विचारों को पेज, ग्रुप में रखकर, उन्हें अन्य लोगों तक पहुँचाते हैं। इसे अपने ब्लाग पर समेटने के साथ ही अन्य भोजपुरियों के साथ साझा भी करते हैं।"

वहीं फेसबुक के माध्यम से दो संस्कृतियों के आपस में जुड़नें कि बात करते हए उत्तरदाता अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करते हैं-

"भोजपुरी संस्कृति को दुनिया के तमाम संस्कृतियों से जुड़ने का माध्यम फेसबुक रहा है। हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को दुनिया के समक्ष रख पाने में सफल हुए हैं। हमारी सांस्कृतिक धरोहरों से दुनिया रु-ब-रु हो रही है जिसका एक सशक्त माध्यम फेसबुक है।"

अतः उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भोजपुरिया प्रवासियों द्वारा अपनी सांस्कृतिक अस्मिता और इसके संरक्षण से जुड़ीं बातों को फेसबुक के माध्यम से एक दूसरे से साझा किया जाता है जिससे नई पीढ़ी इससे परिचित हो एवं पुरानी पीढ़ी दूर ना जा पाए-

"मैं, पर्यावरण हो या सामाजिक मान्यताएँ, दादी-नानी की कथा-कहानियाँ हो माँ की हास्य-करुण चर्चाएँ, फेसबुक पर शेयर करता हूँ और भोजपुरी सांस्कृतिक अस्मिता के संरक्षण का प्रयास करता हूँ।"

पंचम अध्याय- निष्कर्ष एवं सुझाव

सोशल मीडिया प्रभावी और शक्तिशाली हथियार है। मीडिया के इस नवीनतम साधन की सबसे बड़ी विशेषता समान विचारधारा, सांस्कृतिक परिवेश और समान उद्देश्यों को लेकर चलने वाले लोगों का समूहीकरण है। भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सितंबर, 2015 में अमेरिका यात्रा के दौरान फेसबुक मुख्यालय में कहा कि, 'मार्क हम आपसे फेसबुक, ट्वीटर एवं दिल्ली में मिल चुके हैं। आज फेसबुक और ट्वीटर हमारे नए पड़ोसी हैं...' नरेंद्र मोदी द्वारा कही गई यह बात डिजिटल डायस्पोरा में मौजूद लोगों पर भी लागू होती है। इस अध्ययन से प्राप्त तथ्य इसी बात की गवाही देते हैं। अपने मूलभूमि से दूर 'पड़ोस' की तलाश में प्रवासी फेसबुक पर आते हैं। मेजबान देश में भिन्न सांस्कृतिक परिवेश के कारण प्रवासित व्यक्ति के अनुकूलन की गति धीमी होती है। ऐसी परिस्थितियों में वह व्यक्ति अपने परिजनों, दोस्तों इत्यादि से संवाद स्थापित करना चाहता है। ऐसे में संचार के नए माध्यम 'सोशल मीडिया' द्वारा संवाद की प्रक्रिया पूरी की जाती है।

प्रवासी भोजपुरियों से एकत्र किये गए आँकड़े इस तथ्य की पुष्टि भी करते हैं। अपनी मूलभूमि से दूर होने के कारण उत्पन्न हुई 'भावनात्मक क्षति' इन प्रवासियों को फेसबुक पर लेकर आती है। 'साइबर स्पेस' में इन प्रवासियों का समूहन होता है और वे फेसबुक पेज का निर्माण करते हैं ताकि संवाद की यह प्रक्रिया गतिशील रहे।

इस शोध अध्ययन से प्राप्त आँकड़े बताते हैं कि विभिन्न मेजबान देशों में रहने वाले ज्यादातर भोजपुरिया प्रवासी अकेले ही रहते हैं। इनका परिवार इनसे दूर, मूलभूमि पर रहता है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि फेसबुक पर होने की वजह से इन प्रवासियों को घर की कमी महसूस नहीं होती। लेकिन अपनी मूलभूमि से दूर रहने के बाद भी उनके मन से अपनी संस्कृति, अपनी भाषा, अपना गाँव, समाज विस्मृत नहीं हुआ है। इसकी स्पष्ट अभिव्यक्ति प्रवासियों के फेसबुक पोस्टों में देखने को मिलती है। इन पोस्टों में उनकी अस्मिता भी मौजूद रहती है। अपनी मूलभूमि से दूर रहने के बावजूद यह प्रवासी अपनी अस्मिता को लेकर चेतनशील हैं। इन प्रवासियों द्वारा फेसबुक के माध्यम से भोजपुरी की संवैधानिक मान्यता हेतु 'डिजिटल आंदोलन' को चलाया जा रहा है।

शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि भोजपुरी भाषी क्षेत्रों से हुए प्रवासन में लैंगिक भेद भी देखने को मिलता है। कुल प्रवासित भोजपुरियों में 96 प्रतिशत पुरूष हैं वहीं महिलाओं की भागीदारी महज 4 प्रतिशत ही है। वहीं बिहार एवं उत्तर प्रदेश के भोजपुरी भाषी क्षेत्रों से होने वाले प्रवासन में भी व्यापक अंतर देखने को मिलता है। बिहार से प्रवासित होने वाले भोजपुरी भाषी

प्रवासियों की संख्या 65.3 प्रतिशत है। वहीं मूलत: उत्तर-प्रदेश के भोजपुरी भाषी क्षेत्र के प्रवासियों की संख्या 34.7 प्रतिशत है।

आँकड़ों की गवाही इस बात का सबूत दे रही है कि प्रवासियों के बीच मोबाइल फोन के जरिए फेसबुक के इस्तेमाल की आदत और संख्या बढ़ रही है। इस परिदृश्य में सोशल मीडिया के व्यापक महत्त्व और प्रभावशीलता को ऩजरअंदाज नहीं किया जा सकता। मोबाइल क्रांति के इस दौर ने भोजपुरिया प्रवासियों तक अपनी पैठ बना ली है। मोबाइल फोन पहले संचार का साधन था, फिर मनोरंजन का साधन बना और हालिया दौर में सोशल मीडिया एवं मोबाइल फोन के एक हो जाने अर्थात स्मार्टफोन के रूप में एक प्रभावशाली हथियार के तौर पर उभर कर सामने आया है।

इस अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया का हस्तक्षेप प्रवासियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के सभी क्षेत्रों और आयामों में बढ़ रहा है। अपनी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को लेकर प्रवासियों द्वारा आकांक्षित परिवर्तन का पूरा ताना-बाना बुना जा रहा है। 'वर्चुअल स्पेस' में रचा गढ़ा यह संसार उन्हें भौतिक जीवन में अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष करने की ताकत देता है। प्रवासियों के मन परिवर्तन की इस आकांक्षा का प्रतिबिंबन उनके द्वारा चलाये जा रहे फेसबुक पेजों पर देखने को मिलता है। संस्कृति से जुड़े प्रतीकों का संरक्षण एवं संवर्धन ये प्रवासी अपनी फेसबुक के माध्यम से कर रहे हैं।

प्रवासी समूहों के लिए सोशल मीडिया उनकी स्वभूमि से जुड़ने का प्रभावी माध्यम है। इस शोध अध्ययन के आधार पर निष्कर्षतः निम्नलिखित तथ्य रखे जा सकते हैं-

- फेसबुक पर निर्मित साइबर समूह प्रभावी होते हैं।
- फेसबुक का उपयोग कर प्रवासी अपने गांव क्षेत्र एवं भाषा से पुनः जुड़ रहे हैं।
- भोजपुरी लोक साहित्य के संरक्षण एवं संवर्धन को लेकर प्रवासी भोजपुरिया सचेत हैं और फेसबुक के माध्यम से इनके द्वारा भोजपुरी संस्कृति और भाषा के संरक्षण का प्रयास भी किया जा रहा है।
- प्रवासी भोजपुरियों द्वारा फेसबुक का उपयोग अपनी मातृभूमि से जुड़ने और मातृभाषा को संरक्षित करने के लिए किया जा रहा है। फेसबुक के उपयोग से इन प्रवासियों के बीच आपसी जुड़ाव की भावना भी सबल हो रही है।

- समान संस्कृति, परंपरा, भाषिक परिवेश से होने की वजह से प्रवासियों के बीच अपनापन की भावना बढ़ती है।
- प्रवासियों के फेसबुक पोस्टों में मातृभाषा एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति अस्मिताबोध परिलक्षित होता है।
- फेसबुक प्रवासी भोजपुरी भाषियों में भोजपुरिया होने के भाव को कायम रखे हुए है। फेसबुक के माध्यम से इन प्रवासियों को अपनत्व और एकता को मजबूत करने में मदद मिल रही है।
- फेसबुक के माध्यम से प्रवासी अपनी साहित्यिक और सांस्कृतिक रुझान को व्यक्त करते हैं। फेसबुक इनके लिए अपनी अस्मिता को व्यक्त करने और एक सकारात्मक संवाद कि स्थिति उत्पन्न करने में सहायक होता है।
- भोजपुरी अस्मिता के डिजिटल आंदोलन में फेसबुक की महत्वपूर्ण भूमिका है। फेसबुक के जरिए प्रवासी भोजपुरिया अपनी भागीदारी को बेहतर दिशा दे रहे हैं।

सुझाव-

सूचना के नए युग के 'नए परिवेश' में हमें सोशल मीडिया की बहुआयामी भूमिका को समझते हुए कदम उठाने होंगे। सामाजिक संवेदनशीलता एवं बौद्धिक जागरण से हम, प्रभावी और सशक्त माध्यम का उपयोग और भी कारगर तरीके से कर सकते हैं। अत: इसके लिए इस शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझावों पर अमल किया जा सकता है-

- सोशल मीडिया भी सामाजिक जीवन का दर्पण है, अत: यह जरूरी है कि इस ऑनलाइन समाज में 'सहिष्णुता', 'सहजीवन', 'नैतिकता' एवं 'सत्य' जैसे सामाजिक मूल्यों को स्थापित किया जाए।
- सोशल मीडिया के सार्थक उपयोग करने के लिए जन-जागृति बेहद जरूरी है, अत: इस दिशा में भी प्रयास किया जाना चाहिए।
- भारत जैसे विकासशील देश में सोशल मीडिया से संबंधित सरकारी नीतियों को इस प्रकार ढालना होगा जिससे संचार साधनों से वंचित समाज को शीघ्रातिशीघ्र संचार और सूचना के साधन उपलब्ध हो सके।

- सोशल मीडिया के माध्यम से सामाजिक संपर्क को बढ़ाया जा सकता है। अत: 'साइबर स्पेस' में आपसी संपर्कों को बढ़ाने के लिए यह एक बेहतर माध्यम साबित होगा। इस दिशा में भी प्रयास करना चाहिए।
- उपयोगकर्त्ता सोशल मीडिया के सकारात्मक पहलुओं का अधिकतम उपयोग करें। इसके लिए सोशल मीडिया पर इनकी उपस्थिति को प्रोत्साहित करने की चौतरफा कोशिशें होनी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अंबरीष सक्सेना (2014). *सोशल मीडिया एंड न्यू टेक्नोलॉजी*. नई दिल्ली: कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर.

चोपड़ा, एस. (2014). द *बिग कनेक्ट*, रैंडम हॉउस इंडिया: दिल्ली.

दुबे, अजीत (2014). *तलाश भोजपुरी भाषायी अस्मिता की* . नई दिल्ली: इंडिका इन्फोमीडिया.

तिवारी, अर्जुन (2014). *भोजपुरी साहित्य के इतिहास* वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन.

विपुल विनोद & राजवीर सिंह (2014). *Facebook सोशल मिडिया का चमत्कार.* नई दिल्ली: हिंद पॉकेट बुक्स.

जोशी, र., राय, र., चंद्रयान, प., & खत्री, प. (2013). *भारतीय डायस्पोरा : विविध आयाम* (1st ed.). नई दिल्ली: राजकमल.

लोमेश, डॉ. मधु (2013). *समकालीन मीडिया परिदृश्य और अस्मिता मूलक विमर्श.* दिल्ली: हेमाद्री प्रकाशन.

सिंह, डॉ. जयकांत (2013). *भारतीय आर्यभाषा आ भोजपुरी*. मुजफ्फरपुर: राजर्षि प्रकाशन.

सचमिड्ट, ई. & कोहेन, जे. (2013). द *न्यू डिजिटल एज*, जॉन मैरी: लंदन.

स्टैंडेज, टी.(2013). *राइटिंग ऑन द वॉल*, ब्लुम्सबैरी: लंदन.

कुलकर्णी, एस. (2012). *म्यूजिक ऑफ द स्पिनिंग व्हील, महात्मा गांधी मेनिफेस्टो फॉर द इंटरनेट एज*, एमरीलिस: दिल्ली.

वात्स्यायन, कपिला (2011). हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं अस्मिता. In ए. ब. भट्टाचार्य, भारत की बीसवीं सदी (p. 242). नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया.

सिन्हा, विद्या (2011). *भोजपुरी लोक साहित्य : परंपरा और परिदृश्य.* नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग.

चतुर्वेदी, जे., & सिंह, एस. (2010). *डिजिटल युग में मास कल्चर और विज्ञापन*, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा॰) लि॰: नई दिल्ली.

नारायण, बद्री (2010). लोक संस्कृति और इतिहास. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.

मजुमदार, मौसमी (2010). काहे गइले बिदेस. एम्स्टर्डम, नीदरलैंड: केआईटी पब्लिशर्स .

पारख, जे. (2010). *जनसंचार माध्यम और सांस्कृतिक विमर्श,* ग्रंथ शिल्पी: दिल्ली.

Alonso, Andoni and Pedro J. Oiarzabal. (eds. 2010). *Diasporas in the New Media Age: Identity, Politics and Community.* Reno: University Nevada Press.

Rheingold, H. (2000). *The Virtual Community: Homesteading on the Electronic Frontier.* Revised Edition. Cambridge: MIT Press.

जेनिफर एम. बिंकरहोफ. (2009). *डिजिटल डायस्पोरा : आइडेंटिटी एंड ट्रांसनेशनल इंगेजमेंट.* न्यूयार्क: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस.

शिलर, आई., एच. (2009). संचार माध्यम और सांस्कृतिक वर्चस्व (आर. कवीन्द्र, अनु॰). ग्रंथ शिल्पी: दिल्ली.

चतुर्वेदी, जे (2006). *हाइपर टेक्स्ट, वर्चुअल रियलिटी और इंटरनेट,* अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा॰) लि॰: नई दिल्ली.

मैकचेसनी, आर., डब्ल्यू. (2006). *पूँजीवाद और सूचना का युग* (एस. राजेंद्र, अनु॰). ग्रंथ शिल्पी: दिल्ली.

नारायण, बद्री (2005). बिदेसिया. इलाहाबाद: उत्तर मध्य सांस्कृतिक केंद्र.

बुचर, मेलिसा (2003). ट्रांसनेशनल टेलीविजन, कल्चरल आइडेंटिटी एण्ड चेंज. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन.

Hine, C. (Ed.). (2000). *Virtual Ethnography.* London, England: SAGE Publications Ltd.

तिवारी, उदय नारायण (1984). *भोजपुरी भाषा और साहित्य*. पटना : बिहार राष्ट्रभाषा परिषद .

Gibson, W. (1984). *Neuromancer*. New York : Ace Books.

http://ebookepubsdowload.blogspot.in/2013/12/neuromancer-epub-free.html से पुनर्प्राप्त

शोध पत्र/आलेख

सिंह, धनंजय (2014). बिदेसिया लोक-संस्कृति. *प्रतिमान,* 280.

सी, नलनी (2013, मई). सामाजिक सक्रियता का नया चेहरा 'फेसबुक'. *योजना,* 58(5), 23.

झा, रंजित कुमार (2013). तकनीकी दुनिया का बादशाह बनने की तैयारी में है सोशल मीडिया. *योजना*, 58(5), 53.

पित्रोदा, सैम (2013). सूचना का लोकतंत्रीकरण. *योजना*, 58(5), 7-8.

ठाकुरता, परंजय गुहा (2013, मई). डिजिटल स्पेस में विस्फोट. योजना, 58(5), 9-12.

चेन, गुओ मिंग (2012). 'द इंपैक्ट ऑफ न्यू मीडिया ऑन इंटरकल्चरल कम्यूनिकेशन इन ग्लोबल कांटेक्स्ट'. *चाइना मीडिया रिसर्च*. चाइना मीडिया रिसर्च. से पुनर्प्राप्त

Hecht, M.L. (1993). 2002—a research odyssey: Toward the development of a communication theory of identity. *Communications Monographs,*60(1),76-82

Proceedings

Bruns, Axel (2007) Produsage: Towards a Broader Framework for User-Led Content Creation. In Proceedings Creativity & Cognition 6, Washington, DC. Accessed from http://eprints.qut.edu.au

वेबसाइट

http://www.aakhar.com/

http://bhojpuri.us/

http://www.bhojpuriindia.org/

http://www.bhojpurisingapore.org/

http://www.anjoria.com/

http://bhojpuri.org/

http://indiandiaspora.nic.in/

http://bhojpuriaworld-onkar.blogspot.in/2009/02/for-recognition-of-bhojpuri-as.html

http://www.rediff.com/news/report/pbd-neglect-of-bhojpuri-hurts-bihar-origin-nris/20110111.htm

http://indiandiasporaclub.com/file/2014/10/Bhojpuri-Speaking-Diaspora-in-global

http://www.everyculture.com/Ma-Ni/Mauritius.html

http://www.censusindia.gov.in/Census_Data_2001/Census_Data_Online/Language/Statement1.aspx

http://www.ncbi.nlm.nih.gov/pubmed/20712497

शोध प्रबंध (अप्रकाशित)

1. *Identity Construction Online: The use of Facebook by the Uyghur diaspora by* Reziwanguli Nuermaimaiti (A thesis submitted in partial

fulfilment of the requirements of Master of International Communication, Unitec Institute of Technology, New Zealand)

2. *The Kurdish Diaspora's Use of Facebook in Shaping a Nation* by Kurdin Jacob (A master Thesis has been carried out at The Faculty of Humanities, University of Bergen, 2013)

Report

1. *High Level Committee On Indian Diaspora*
2. *Promoting Investments from the Indian Diaspora: A New Beginning*

(Special Report An OIFC Publication)

लेख

http://www.tehelka.com/2013/07/songs-of-belonging/

पत्र-पत्रिका

पाती - अंक 76